प्रेस पंजीयन एम.पी.एच.आई.एन./२०११/४८५६५

देश के हर नगर व ग्रामांचल में
दैनिक निर्दलीय
को प्रतिनिधि चाहिए
साहित्यिक,सांस्कृतिक व सामाजिक
अभिरुचि वालों को प्राथमिकता।
संपर्क करें-+91 8839797448/9424443401
निर्दलीय प्रकाशन
फ१९६/७ शिवाजी नगर, भोपाल ४६२ ०१६

निर्दलीय प्रकाशन का स्वर्ण जयंती वर्ष

निर्दलीय

संपर्क-फ-११६/७ शिवाजी नगर, भोपाल

निष्पक्षता, निर्वैरता व निर्भयता का दैनिक प्रवक्ता

ई-मेल: nirdaliyadaily@gmail.com,nirdaliya@rediffmail.com

दैनिक निर्दलीय
साप्ताहिक निर्दलीय
और मासिक निर्दलीय
अब तीनों स्वरूपों में वेबसाइट
www.nirdaliya.comपर उपलब्ध
विधि: पहले उक्त लिंक पर जाएं
फिर क्लिक करें
e-paper, इसके बाद दैनिक निर्दलीय जिस तारीख
का पढ़ना हो वह तारीख और पृष्ठ संख्या डालें।
साप्ताहिक हेतु weekly निर्दलीय
और मासिक हेतु Magazine निर्दलीय क्लिक करें
निर्दलीय एफ-११६/७ शिवाजी नगर, भोपाल-४६२०१६

वर्ष-५३/१५ अंक- ८३ भोपाल, ५ अक्टूबर, डाक ६ अक्टूबर २०२५ भोपाल व नई दिल्ली से प्रकाशित पृष्ठ -८ मूल्य १+१/-(संप्रेषण/स्वैच्छिक)

राजनीति से दूर हैं अच्छे-अच्छे लोग। राजनीति में बढ़ रहे महज विलासी लोग।।

अग्र विचार
विचार प्रवाह-२८९

कैलाश आदमी

कट्टरपंथी हिंदुओं की देश में इकलौती संस्था राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के शताब्दी वर्ष समारोह में देश के पूर्व राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद ने कहा कि राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ में एक निश्चित उद्देश्य की पूर्ति के लिए स्वयं सेवकों की भागीदारी महत्वपूर्ण है किंतु उन्होंने इस बात पर चिंता व्यक्त की कि समाज के अच्छे लोग राजनीति से दूरी बनाए रखते हैं। नागपुर में आयोजित इस समारोह में संघ के वर्तमान प्रमुख मोहन भागवत मंचासीन थे। श्री भागवत ने इस अवसर पर कहा कि भारत के पड़ौसी देशों में सरकारों ने समाज से दूरी बना रखी थी जिससे जनता का आक्रोश फूट पड़ा सरकारें धराशायी हो गईं। चूंकि संघ केंद्र में सत्तारूढ़ भाजपा की मातृसंस्था है इसलिए वे यह नहीं कह पाए कि भारत में भी मोदी सरकार ने समाज से दूरी बना रखी है तथा श्री मोदी पार्टी में विलासियों और अपराधियों की भीड़ को प्रश्रय दे रहे हैं।

मैं पूर्व राष्ट्रपति श्री कोविद के कथन से सहमत हूं कि अच्छे लोग राजनीति से दूरी बनाए रखते हैं। मैंने स्वयं अपने जीवन काल में अनुभव किया कि राज्यों में ही नहीं केंद्र में भी जितनी सरकारें बनीं उनमें सम्मिलित नेताओं ने ना तो राष्ट्रीय स्वाभिमान का ध्यान रखा और ना ही मितव्ययितापूर्ण स्वावलंबी जीवन जिया। ऐसे नेताओं में ना केवल प्रधानमंत्री बल्कि मुख्य मंत्री भी सम्मिलित रहे तथा वर्तमान प्रधानमंत्री और राज्यों के मुख्यमंत्री भी एश्वर्यपूर्ण जीवन जी रहे हैं। इसका अत्यंत विपरीत प्रभाव समाज पर पड़ा है और नेताओं की देखा-देखी नागरिक भी ऐसा ही जीवन जीने की दिशा में कदम उठाते रहे हैं तथा उनकी आगे की योजना भी कुछ इस तरह की ही दिखाई देती है। दरअसल केंद्र में सत्तारूढ़ भाजपा और विपक्ष की भूमिका निभा रहे कांग्रेस सहित सभी प्रमुख दलों की स्थिति यह है कि वे संसद और विधानसभाओं के लिए जब उम्मीदवारों का चयन करने बैठते हैं तो यह देखते हैं कि प्रत्याशी की जाति और धर्म क्या है, समाज में उसकी हैसियत क्या है तथा चुनाव में वह कितनी राशि व्यय कर सकेगा। इसके साथ ही प्रत्याशियों से उनका बायोडाटा लेकर यह पता लगाया जाता है कि प्रत्याशी पूर्व में किस दल और किन संस्थाओं से संबंधित रहा है तथा उसके ऊपर कितने मुकदमे चल रहे हैं। यह देखने की बजाए कि जिन प्रत्याशियों के ऊपर आपराधिक प्रकरण दर्ज हैं उन्हें टिकट ना दिया जाए बल्कि अधिकाधिक मुकदमों का सामना कर रहे प्रत्याशियों को ही टिकट थमा दिया जाता है तथा उनका समाज व क्षेत्र में कितना जातिगत, सांप्रदायिक और धार्मिक प्रभाव है इसका भी ध्यान रखा जाता है। यह नहीं देखा जाता कि यह प्रभाव बनाने में प्रत्याशी की आपराधिक पृष्ठभूमि रही है।

उक्त कारणों से ही समाज के अच्छे लोग ना केवल दलगत राजनीति से दूरी बनाए रखते हैं बल्कि स्वतंत्र रूप से प्रत्याशी बनना भी पसंद नहीं करते क्योंकि यदि स्वतंत्र प्रत्याशी भी दलीय प्रत्याशियों की भांति समाज में जातिगत, संप्रदायगत और आपराधिक पृष्ठभूमि वाला दबदबा नहीं रखता और उसकी धार्मिक पकड़ भी कमजोर है तो उसे मतदाताओं का समर्थन नहीं मिल पाता बल्कि जमानत बचाना भी कठिन हो जाता है।

प्रत्याशियों के चयन में यह भी ध्यान रखा जाता है कि प्रत्याशी अनुसूचित जाति, जनजाति और पिछड़ा वर्ग से आता है अथवा नहीं। उसे उसी की जाति, जनजाति या पिछड़े वर्ग क्षेत्र से ही टिकट दिया जाता है इसलिए सामान्य वर्ग के लोग पीछे रह जाते हैं। यही नहीं समाज के अच्छे लोग मतदाता बनना तक पसंद नहीं करते और कई मतदाता ऐसे होते हैं जो मतदाता होते हुए भी मतदान हेतु मतदान केंद्रों तक नहीं जाते। ऐसे मतदाताओं में सरकारी व गैर सरकारी उच्च पदों पर पदस्थ व्यक्ति भी गिनाए जा सकते हैं।

मैं स्वयं विगत छह दशकों से सर्वोदय संगठनों से जुड़ा हुआ हूं। वर्ष १९६८ में जब सर्वोदय के शिखर पुरुष आचार्य विनोबा भावे ने आचार्य कुल नामक संस्था का गठन किया तो उन्होंने यह शर्त रखी कि इस संस्था के सदस्य वही लोग बन सकेंगे जो मतदान प्रक्रिया से दूर रहते हैं। उनका कहना था कि जो मतदान करते हैं उन्हें मत देकर अपनी निष्ठा उजागर करना पड़ती है। यदि वे किसी दल विशेष के प्रत्याशी को मत दें तो उनकी निष्पक्षता नहीं रह जाती जबकि आचार्य कुल के सदस्यों के लिए निष्पक्ष रहने के साथ ही निडर और निर्भीक रहना आवश्यक है। मैंने इस संगठन की सदस्यता ली तथा आज तक उसकी आचार्य संहिता का पालन कर रहा हूं। मैं पूर्व में आचार्य कुल का राष्ट्रीय संरक्षक रहा तथा वर्तमान में कार्यकारी राष्ट्रीय अध्यक्ष हूं। सर्वोदय एवं आचार्य कुल से जुड़ाव के आधार पर मैं कह सकता हूं कि देश में लाखों लोग ऐसे हैं जो सज्जन पुरुषों व महिलाओं की श्रेणी में आते हैं किंतु जानबूझकर राजनीति से दूरी बनाए रखते हैं। मेरे संज्ञान में ऐसे कई उच्च पदाधिकारी हैं जिनमें भारतीय प्रशासनिक व अन्य सेवाओं के लोग भी सम्मिलित हैं, अकसर मतदान करने नहीं जाते। सर्वोदय नेता श्री जयप्रकाश नारायण ने यह अभियान चलाया था कि मतदाताओं के लिए यह विकल्प मिलना चाहिए कि वे मतदान करने जाएं तो उन्हें यह छूट दी जाए कि वे यह जता सकें कि वे जानबूझकर मतदान नहीं कर रहे हैं क्योंकि उनकी नजर में कोई भी प्रत्याशी ऐसा नहीं है जिसे मत दिया जाए। सरकार ने उनकी मांग मंजूर कर ली तथा नोटा की सुविधा दी किंतु यह चालाकी बरती कि नोटा मत देने वाले व्यक्तियों की संख्या यदि विजयी घोषित किए जाने वाले व्यक्ति को प्राप्त मतों से अधिक है तो भी नोटा मतों को वरीयता ना दी जाए। इससे श्री जयप्रकाश नारायण जैसे व्यक्ति का भी उद्देश्य धूल धूसरित हो गया। यदि नोटा मत देने वाले व्यक्तियों के मतों को वरीयता दी जाए तो सज्जन व्यक्तियों को भी मत देने में कोई परेशानी नहीं होगी।

अंत में मेरी दो काव्य पंक्तियां-

राजनीति से दूर हैं अच्छे-अच्छे लोग।
राजनीति में बढ़ रहे महज विलासी लोग।।

संस्कृति: जड़, आत्मा और बहुसांस्कृतिक संवाद

डॉ. सुनीता शर्मा

संस्कृति केवल परंपरा या त्योहारों का संग्रह नहीं है; यह हमारी आत्मा, हमारे आचरण और व्यवहार का प्रतिबिंब है। यह वह प्रकाश है जो भीतर जलता है और हर कार्य, हर शब्द और हर मुस्कान में झलकता है। संस्कृति हमें यह सिखाती है कि हम कौन हैं, कहाँ से आए हैं और किस दिशा में बढ़ रहे हैं।

जड़ों की गंध: दिल्ली और गांव- दिल्ली, जहाँ मेरा जन्म हुआ, और उत्तर प्रदेश का मेरा गांव, जहाँ मेरा बचपन बीता, दोनों ही मेरे व्यक्तित्व के निर्माण में महत्वपूर्ण रहे।

गांव का सरलपन, मिट्टी की खुशबू, त्योहारों की सहजता और लोकगीतों की मिठास, वहीं दिल्ली की आधुनिकता, विश्वविद्यालयों का वातावरण और बहुराष्ट्रीय माहौल – इन दोनों के मेल ने मुझे एक ऐसा दृष्टिकोण दिया जो आधुनिकता और संस्कृति का संगम है।

मिट्टी की खुशबू, पगों में बसी,
हर रेत, हर पत्ता, हर नदी कहानी कहती।
बचपन की गलियाँ, त्योहारों की धूम,
जहाँ धूपछाँव में बचपन मुस्कुराता।

न्यूज़ीलैंड: संस्कृति का नया घर- न्यूज़ीलैंड में मेरी हिंदी और भारतीय संस्कृति ने एक नई चेतना ली। मैंने इसे न केवल जिया, बल्कि प्रवासी बच्चों और परिवारों को उनसे जोड़ने का प्रयास किया। माओरी रीति-रिवाज टीका (सम्मान और शुभकामना) और टिकंगा (परंपरा और विश्वास) मेरे जीवन का हिस्सा बन गए। हिंदी दिवस, दीपावली, गणतंत्र दिवस और होली के माध्यम से मैंने भारतीय, कीवी और माओरी बच्चों को एक मंच पर लाकर संस्कृति का संगम प्रस्तुत किया-

संस्कारों की वह नर्म डोर,
जो हर कदम में हमें संवारती।
भले दूर देश हो, शहर का शोर हो,
मन की गहराई में वही पुकार आती–
मूल को मत भूलो, जड़ों को मत छोड़ो।

कहानियों का संगम- माओरी लोककथा मोई ने सूरज को कैसे धीमा किया÷ में मोई और उसके भाई सूर्य की गति को नियंत्रित कर दिन लंबा करने का प्रयास करते हैं। बच्चों ने इसे भारतीय कथाओं के बाल-हनुमान के सूर्य प्रसंग से जोड़ा-

जहाँ बहुरंगी फूल खिले हों,
वही सिखाता है संयम और सौंदर्य।
जहाँ संस्कारों का दीप जलता हो,
वही रोशन करता है हमारी आत्मा का मार्ग.. !

माओरी और भारतीय संस्कृति की समानता- विश्व की विभिन्न सभ्यताओं और संस्कृतियों में अनेक भिन्नताएँ होते हुए भी कुछ बुनियादी मान्यताएँ एक-दूसरे से मिलती-जुलती प्रतीत होती हैं। माओरी और भारतीय संस्कृति इसका उत्कृष्ट उदाहरण हैं। दोनों ही संस्कृतियाँ अपने जीवन दर्शन, परंपराओं और मूल्यों में ऐसी समानताएँ रखती हैं, जो मानव समाज को गहरे स्तर पर जोड़ती हैं।

माओरी संस्कृति में Papatuanuku (माँ धरती) और Ranginui (आकाश पिता) को सृष्टि का आधार माना गया है, वहीं भारतीय संस्कृति में पृथ्वी माता और आकाश देव का उल्लेख प्राचीन शास्त्रों में मिलता है। यह दर्शाता है कि दोनों ही परंपराएँ प्रकृति को केवल संसाधन न मानकर जीवित और पूज्य सत्ता मानती हैं।

माओरी समाज में Whanau (परिवार) और Iwi (जनजाति) की अवधारणा भारतीय संस्कृति के संयुक्त परिवार और गोत्र परंपरा से अत्यधिक मेल खाती है। दोनों संस्कृतियाँ व्यक्ति से अधिक सामूहिकता, आपसी सहयोग और सामूहिक उत्तरदायित्व को महत्व देती हैं। पूर्वजों का सम्मान भी दोनों में समान है। माओरी अपने Tipuna (पूर्वजों) को आज भी अपने जीवन का हिस्सा मानते हैं। इसी प्रकार भारतीय संस्कृति में पितृ-तर्पण और श्राद्ध जैसे अनुष्ठानों के माध्यम से पूर्वजों के प्रति श्रद्धा प्रकट की जाती है।

भाषा और मौखिक परंपरा की बात करें तो माओरी संस्कृति में waiata (गीत) और korero purakau (कथाएँ) पीढ़ी-दर-पीढ़ी ज्ञान का संवहन करती रही हैं। भारतीय संस्कृति में भी कथावाचन, लोकगीत, श्रुति परंपरा इसी प्रकार ज्ञान और मूल्य संचार का माध्यम रही है। आध्यात्मिक दृष्टि से भी दोनों संस्कृतियाँ आत्मा की उपस्थिति को स्वीकार करती हैं। माओरी विश्वास करते हैं कि हर जीव, नदी और पर्वत में wairua (आत्मा) का वास होता है, वहीं भारतीय संस्कृति में आत्मा-परमात्मा की अवधारणा प्रत्येक प्राणी और वस्तु को पवित्र मानती है।

कला और नृत्य भी समान सूत्र पिरोते हैं। माओरी Haka और Carving के माध्यम से अपनी शक्ति, परंपरा और गौरव को अभिव्यक्त करते हैं। भारत में शास्त्रीय नृत्य, लोकनृत्य और मूर्तिकला संस्कृति और शक्ति के प्रतीक माने जाते हैं।

अंततः कहा जा सकता है कि माओरी और भारतीय संस्कृति, भौगोलिक दूरी के बावजूद, जीवन दृष्टि और मूल्यों में गहन समानता रखती हैं। दोनों ही परंपराएँ हमें सिखाती हैं कि मनुष्य का सच्चा विकास तभी संभव है जब वह प्रकृति का सम्मान करे, परिवार और समाज को प्राथमिकता दे, पूर्वजों को याद रखे और आध्यात्मिकता को जीवन का आधार बनाएं।

संस्कार और बहुसांस्कृतिकता- अपनी संस्कृति का सम्मान करना केवल व्यक्तिगत गौरव नहीं, बल्कि दूसरों की संस्कृतियों का भी आदर सिखाता है। अपने आचरण, संस्कार और व्यवहार से हम दूसरों को प्रभावित करते हैं। यही बहुसांस्कृतिक संवाद और अंतरराष्ट्रीय सहयोग की शक्ति है-

जहाँ बहुरंगी संस्कृति मिलती है,
वहीं सच्चा संवाद जन्म लेता है।
विविधता में एकता की वह डोर,
जो हमें जोड़ती है, आगे बढ़ाती है।

ऑस्ट्रेलिया: साझा मंच और नई शुरुआत- अब ऑस्ट्रेलिया में मैं नेटिव समुदाय, भारतीय प्रवासियों और स्थानीय युवाओं के साथ भाषा, कला, संगीत और संस्कृति के माध्यम से साझा मंच बनाने का प्रयास कर रही हूँ। यह मंच विविधता में एकता का प्रतीक बनेगा। संस्कार और संस्कृति हमारी नींव हैं–

इन्हें जीओ, साझा करो और दुनिया को जोड़ो।

-मेल्बोर्न/ ऑस्ट्रेलिया

संघ चक्र में अधिनायकवाद की तीली

राकेश कुमार वर्मा

स्वतंत्रता पश्चात भारत न केवल सम्राज्यवाद के बहुआयामी शिकंजे से बल्कि आर्थिक शोषण से उत्पन्न पिछड़ेपन, सामाजिक,सांस्कृतिक विद्रूपताओं से मुक्ति का प्रयास कर रहा था। एक ओर जहा पाश्चात्य संस्कृति की भौतिक चकाचौंध उसे आकर्षित कर रही थी वहीं देश की समृद्ध वैचारिक अध्यात्मिक परंपरा, नवीन मूल्यों के लिए संघर्ष कर रही थी। ऐसे मतान्तरों के बीच महात्मा गांधी के दर्शन ने मानवीय जीवन को समृद्ध करने में अहम भूमिका निभाई। उनके विचारों की व्यापकता से बिनोबा भावे, राम मनोहर लोहिया सहित डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार जैसे व्यक्तित्वों ने विविध क्षेत्रो में रचनात्मक कार्यों को गति दी । वैचारिक मतभेदवश कांग्रेस से पृथक डॉ. हेडगेवार ने हिंदुत्व उन्नयन को लेकर महाराष्ट्र के नागपुर में साल १९२५ में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना की और प्रथम सर संघचालक का गुरतर दायित्व निभाया।

संघ की आधारभूत संगठनात्मक इकाई शाखा है जहाँ राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवको का वैचारिक और शारीरिक प्रशिक्षण होता है। जब महिलाओं के लिए भी इसी तरह के संगठन की आवश्यकता महसूस की गई तो डॉ. हेडगेवार से विचार-विमर्श के बाद साल १९३६ में महाराष्ट्र के वर्धा में लक्ष्मीबाई केलकर ने राष्ट्र सेविका समिति की स्थापना की।

डॉ. हेडगेवार के बाद माधवराव सदाशिव गोलवलकर गुरूजी ने द्वितीय सर संघचालक के रूप में संघ का कार्यभार सम्हाला। राष्ट्रीय पुनर्निर्माण में प्रत्येक वर्ग की भागीदारी सुनिश्चित करने के अभियान में मजदूर, किसान, कर्मचारी, शिक्षक, वनवासी, विद्यार्थी, दुर्गा वाहिनी, राष्ट्र सेविकाओं को संगठित किया। इन संगठनों के कल्याण को लेकर कई रचनात्मक प्रकल्प चलाये गये। इसमें कोई संदेह नही कि संघ की १०० वर्ष की यात्रा ने देश को युगानुकूल सांस्कृतिक रूप से समृद्ध बनाया अपितु उसके समर्पण ने अनेक ज्वलंत समस्याओं के निराकरण में महती भूमिका निभाई।

डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी के नेतृत्व में एकात्म मानववाद का दर्शन लेकर आये पण्डित दीनदयाल उपाध्याय जैसे व्यक्तित्वों ने राजनीति के क्षेत्र में देश को स्वस्थ्य और भयमुक्त समाज देने का विश्वास दिलाया। हालांकि गुरूजी इससे सहमत नहीं थे। उनका मानना था कि राजनीति में नैतिक आचरण कोरी कल्पना है। वही राज्यसभा सांसद रहे सुप्रसिद्ध विचारक दत्तोपंत ठेंगड़ी का मत भी गुरूजी से भिन्न नहीं था। यही विश्वास हरिशंकर परसाई के 'राजनीति' व्यंग्य और सआदत हसन की कहानी 'बाबू गोपीनाथ' का स्मरणबोध कराती है। 'जीवन के अंतिम क्षण व्यतीत करने के बारे में गोपीनाथ ने मण्टो को दो स्थान बताये, पहला ङ्क वैश्या का कोठा और दूसरा मजार क्योंकि इन दोनो जगहों पर फ़र्श से लेकर फलक तक धोखा-फरेब ही होता है। जो आदमी स्वयं को धोखा देना चाहता है उसके लिए इससे मुकम्मल जगह क्या होगी ऐसे अनेक तथ्यहीन मसले हैं जो हम तमाशबीनों को पसंद है अन्यथा कौन नहीं जानता कि कोठे पर उनके वालिद अपनी औलाद से पेशा कराते हैं और इबादतगाहों में इंसान अपने खुदा से।'

आखिर वह क्षण आ ही गया जब नैतिक मूल्यों के तप से राजनीतिक प्रतिसाद का बीजारोपण हुआ। समकालीन घटनाओं को राजनैतिक लाभ अनुकूल भ्रामक तथ्य प्रस्तुत कर येन केन प्रकारेण सत्ता प्राप्ति में सफल योगियों ने भोग को मूल मंत्र बनाया । जब भी इस पर उंगलियां उठी उसे पिछले शासकों की शैली के तुलनात्मक अस्त्र से उदासीन कर दिया गया। इससे न केवल संघ के अनुषंगिक संगठनों के लक्ष्य, हित, चरित्र और मूल्य प्रभावित हुए अपितु अंत्योदय सारहीन रह गया। अंततह धर्मांधता के हिंसक आगोश में विकास की बुनियादी जरूरतें दम तोड़ने लगीं। मंहगाई, अतिरिक्त करभार, विपक्ष को समाप्त करने का अभियान, अन्याय को मोदी है तो मुमकिन है की तर्ज पर भाग्य विधाता स्वरूप स्वीकार किया। अतिवाद के इस अधिनायकवाद ने संघ पर प्रभुत्व जमाना शुरू कर दिया। संघ के निष्ठित अधिकारियों को रक्षात्मक रुख अपनाने पर विवश होना पड़ा।

इस श्रृंखला में भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता मुरली मनोहर जोशी समेत ५७ लोगों ने केन्द्र सरकार की चारधाम परियोजना के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिस बीआर गवई को पत्र लिखा. हिमाचल प्रदेश में बीते दिनों आई प्राकृतिक आपदाओं का भी जिक्र करते हुए उन्होंने इस परियोजना के तहत निर्माणाधीन मार्गों को साढ़े पांच मीटर से बढ़ाकर १२ मीटर चौड़ा किये जाने पर आपत्ति उठाई है। साथ ही बहुप्रचारित मोदी सरकार की आर्थिक नीति खिलाफ दावा किया कि आर्थिक विकास को केवल जीडीपी और प्रति व्यक्ति आय वृद्धि से नहीं आंका जा सकता। इसके लिए जनकल्याण समानता समग्रता और आध्यात्म को भी पैमाना बनाना चाहिये।

भारत में वर्तमान मोदी सरकार की आर्थिक नीतियों के दुष्परिणामस्वरूप आय में बढ़ती असमानता पर चिंता जताते हुए उन्होंने दावा किया कि साल २०२१ के सर्वे के अनुसार केवल १० प्रतिशत लोगों के पास ही देश की कुल ६५ प्रतिशत सम्पत्ति जमा हो गयी है गलत आर्थिक नीतियों के कारण ही महाविद्यालयों में नामांकन प्रभावित हुआ हैं। जलवायु परिवर्तन, नशाखोरी और बढ़ती आत्महत्याओं के लिये भी मोदी सरकार पर उंगली उठाई गयी। दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानवतावाद का स्मरण कराते हुए मोदी सरकार की व्यापार नीति, बेरोज़गारी, अशिक्षा और महंगी चिकित्सा सेवाओं पर सवाल उठाये। उनका कहना था कि आज पर्याप्त नौकरी नहीं उपलब्ध होने से युवाओं में भारी आक्रोष पनप रहा है। विश्व की चौथी अर्थव्यवस्था बताने के दावों पर मोदी सरकार पर कटाक्ष करते हुए उन्होंने बताया कि भारत में प्रति व्यक्ति आय ३000 डालर से भी कम है जबकि जापान में यह हमसे दस गुना अधिक है।। गरीब की बढ़ती बदहाली पर चिंता व्यक्त करते हुए उन्होंने बताया कि सबकी उन्नति बिना हिंदुत्व के लक्ष्य को प्राप्त नहीं किया जा सकता। उन्होंने बेलगाम पूंजीवाद के अंधाधुंध विकास की जगह उपलब्ध संसाधनों के सामूहिक उपयोग पर बल दिया ।

इससे पहले सर संघचालक मोहन भागवत ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के ७५ वर्ष की आयु पूरा करने की ओर संकेत करते हुए स्मरण कराया कि सच्चा स्वयंसेवक अहंकारी नहीं होता। पदमुक्ति से भयग्रस्त पीएम मोदी ने तब विभिन्न मंचों पर संघ स्तुतिगान को भाषण का हिस्सा बनाया । शायद डॉ. हेडगेवार की लोकेषणा,आत्मश्लाघा की प्रतिज्ञा नेपथ्य में चली गई है इसलिए सर संघचालक को मंतव्य बदलना पड़ा।

-भोपाल

शहरी बुजुर्गों का जीवन और चिंताएं

रमा निगम

हम दो हमारे दो। हम दो हमारा एक। हम दो, बस अभी तो हम दो ही रहेंगे। इन सभी से दो चार होता हुआ शहर अब तेजी से बुजुर्ग आबादी की और बढ़ रहा है। ऐसा अनुमान है कि 2050 की समाप्ति तक देश में वरिष्ठ नागरिकों की कुल संख्या 30 करोड़ से अधिक हो जायेगी। बदलती और बढ़ती जनसंख्या के बीच,शहर में निवास करने वाले वरिष्ठ नागरिकों का जीवन और उनसे जुड़ी हुई समस्याएं सामाजिक और नीतिगत चिंता का कारण बन गई हैं।

यूं तो शहरों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाओं के लिए विशेष रूप से जाना जाता है। और साथ ही सामाजिक मेलजोल व आधुनिक जीवन शैली का केंद्र भी माना जाता है। लेकिन यही शहरी वातावरण वरिष्ठ नागरिकों के लिए अक्सर दोहरी चुनौतियों का संकेत दर्शाता है। उनमें से कुछ महत्वपूर्ण व प्रमुख चुनौतियों का जिक्र में यहां करना चाहूंगी। जिनमें से प्रमुख हैं, सुरक्षा की कमी एवं शोषण के कारण अपराध का बढ़ता हुआ खतरा। अकेले रह रहे बुजुर्ग चोरी, धोखाधड़ी और शारीरिक शोषण जैसे अपराधों के लिए आपराधिक तत्वों के लिए आसान निशाना बन जाते हैं। शारीरिक और मानसिक रूप से तथा अलगाव का दंश झेलने के कारण आपराधिक तत्वों से निपटना वरिष्ठ नागरिकों के लिए मुश्किल व चुनौति भरा कार्य हो जाता है। आज का युग डिजिटल युग है। और ऐसे में इन्हें अक्सर ऑनलाइन या फोन के माध्यम से होने वाली आर्थिक धोखाधड़ी का सामना भी करना पड़ता है। बहुत से बुजुर्ग व्यक्ति नवीन तकनीक का उपयोग नहीं कर पाते हैं। इस कारण वे कई सरकारी सुविधाओं का लाभ प्राप्त नहीं कर पाते हैं। और सोशल मीडिया का उपयोग न कर पाने के कारण सामाजिक मेलजोल से कट जाते हैं।

यहां में अक्सर शहरों में होने वाली कुछ प्रमुख अव्यवस्थाओं के बारे में जिक्र करना चाहूंगी। जिनमें खराब फुटपाथ के साथ ही अतिक्रमण वाले फुटपाथ और पार्कों की संख्या में कमी का होना। इसके साथ ही अव्यवस्थित यातायात। जो कि पैदल चलने में मुश्किल तथा जोखिम भरा हो तब ऐसी स्थिति में यह बुजुर्गों के लिए अत्यंत असुरक्षित व शारीरिक क्षमता व सक्रियता को कम कर देने वाला होता है। यदि बुजुर्ग व्यक्ति सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करते हैं, तब भीड़ भाड़ व दुर्गम परिवहन के कारण उनकी गतिशीलता व क्षमता सीमित हो जाती है। शहरों में लोगों के मध्य ग्रामीण परिवेश की तरह आत्मीय संबंधों का चलन बहुत कम देखने में आता है। इसलिए यहां सामाजिक सहयोग,सुरक्षा व आर्थिक सहयोग सीमित हो जाता है। इसलिए कमजोर सामाजिक सुरक्षा व आर्थिक मजबूती के अभाव में वे असुरक्षित महसूस करते हैं। इसका एक कारण यह भी कि बहुत से वरिष्ठ नागरिकों के पास पर्याप्त सामाजिक सुरक्षा और पर्याप्त पेंशन का अभाव है। पुलिस को वरिष्ठ नागरिकों के लिए समर्पित हेल्पलाइन के माध्यम से नियमित पेट्रोलिंग की व्यवस्था करना चाहिये। जिससे वरिष्ठ नागरिक अपनी सुरक्षा के प्रति और अधिक आश्वस्त हो सेकें।

इन चुनौतियों के समाधान पर विचार किया जाये और ठोस कदम उठाना होतो सिर्फ सरकारी नीतियों के भरोसे नहीं रहा जा सकता है। बल्कि, सामाजिक सोच में बदलाव के साथ ही सामुदायिक भागीदारी के प्रयासों से ही यह संभव हो सकेगा। शहरों के बुनियादी ढ़ांचों को वरिष्ठ नागरिकों के अनुकूल बनाने हेतु कुछ सुझाव अपेक्षित हैं। फुटपाथ पर अतिक्रमण न हो, फुटपाथ ऐसे हों जो सुरक्षित हों तथा जहां हमारे बुजुर्गों को उस पर चलने में सुगमता महसूस हो। प्रत्येक मोहल्ले में वरिष्ठ नागरिकों के लिए क्लब एवं डे-केयर बोर्डिंग आदि की सुविधाएं उपलब्ध हों। इन सबके साथ ही समर्पित स्वास्थ्य सेवाओं को बढ़ावा देना भी आवश्यक है। जिनमें घर पर स्वास्थ्य देखभाल से संबंधित सेवाओं को बढ़ावा दिया जाना चाहिये। युवाओं को वरिष्ठ बुजुर्ग नागरिकों के साथ समय बिताने और उन्हें डिजिटल रूप से साक्षर बनाने के लिए प्रोत्साहन दिया जाना चाहिये। इसके लिए जो बुजुर्ग या उनके परिजन सक्षम हैं। वह मानदेय या कुछ धनराशी का भुगतान कर सकेत हैं और जो बुजुर्ग सक्षम नहीं हैं वहां सरकार या गैर सरकारी संगठन इन जिम्मेदारियों को उठा सकती हैं। इस तरह से बुजुर्गों की सहायता तो होगी ही साथ ही ऐसे युवा जिनके पास रोजगार या कोई काम धंधा नहीं है, उन्हें भी रोजगार का साधन मिल जायेगा।

हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि वरिष्ठ नागरिक हमारे परिवार व समाज के लिए एक अमूल्य धरोहर हैं। उनके अनुभव हमारे लिए बहुमूल्य है। हम सभी एक सभ्य समाज का हिस्सा हैं। यह हमारी सामूहिक जिम्मेदारी है कि विकास की दौड़ में अपने बुजुर्गों को भी साथ लेकर चलना होगा और उनकी गरीमा व सुरक्षा बनी रहे इस बात का ध्यान रखना होगा।

-बंगलुरु